आधुनिक कला में छापाकला की महत्ता

ज्योति रानी
शोधार्थिनी
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ।
ईमेलः *jyotiaradhya.2022@gmail.com*

प्रोफेसर अंजू चौधरी
प्राचार्य
महिला महाविद्यालय
किदवई नगर, कानपुर

Reference to this paper should be made as follows:

ज्योति रानी
प्रोफेसर अंजू चौधरी

आधुनिक कला में छापाकला की महत्ता

Artistic Narration
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 29
pp. 173-177

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

सारांश

आधुनिक युग में छापाकला के क्षेत्र में नई विधि व तकनीकों ने एक क्रांति का सूत्रपात किया है। कलाकारो को स्वंय को अभिव्यक्त करने के लिए नए माध्यम और तकनीक प्रदान करके कला जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए है जिससे डिजिटल कला चित्रण और ग्राफिक अलग–अलग शैलियों के रूप में उभरे है इस प्रकार इसमें कई तकनीकें जुड़ती जा रही है। और अब कम्प्यूटर तकनीक छापाकला में सम्मलित हुई तो छापाकला की सीमाओं को और छापा शब्द की क्षमताओं को अत्यधिक विस्तार मिला है कम्प्यूटर अपनी अनन्त सम्भावनाओं को लेकर उनके सामने है जिससे कलाकार अपनी कल्पना के ओर भी करीब पहुंचकर इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकता है। जो इससे पहले सम्भव नही था। छापाकला की महत्ता बढ़ने के साथ ही इसकी विधाओ का भी विकास बढ़ने लगा।

मुख्य बिंदु

छापाकला, संस्कृति, क्रांतिकारी, रचनात्मक, संभावनाओं, तकनीक, राष्ट्रीय, अंर्तराष्ट्रीय, डिजिटल, कार्यशालाओं

आधुनिक युग में छापाकला एक ऐसी कला है जिसमें चित्रकला, मुद्रण और डिजाइन के माध्यम से भावों, विचारों और संदेशों को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है। छापाकला की अनेकों तकनीकी विधाएँ हैं, जिनमें विचारों को निगेटिव में ढालना पड़ता है। लकड़ी के ठप्पों अर्थात् वुडकट से लेकर लिनोलियम प्लाईवुड, ताँबें, जिंक व स्टील प्लेट, फेवीकॉल और बेकार की सामग्री तक का प्रयोग इसमें किया जाता है। आज छापाकला आधुनिक ललित कलाओं का एक अभिन्न अंग बन चुकी है, जो दृश्य संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। समकालीन कला, डिजाइन और संचार के विभिन्न पहलुओं में आज छापाकला महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर चुकी है।

आज ललित कलाओं के क्षेत्र में छापाकला की विधि तकनीकों ने एक क्रांति का सूत्रपात किया है डिजिटल मीडिया के आगमन के साथ छापाकला अर्थात् ग्राफिक कला ने आकर्षक और संप्रेषणीय (इंटरैक्टिव) दृश्य सामग्री के निर्माण को सक्षम एवं प्रबल किया है जिससे जटिल से जटिल विचारों व भावनाओं तथा अन्य डेटा को अधिक सुलभ और सरल तरीके से समझना आसान हो गया है साथ–ही–साथ ग्राफिक कला ने कलाकारों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए नए माध्यम और तकनीक प्रदान करके कला जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। जिससे डिजिटल कला, चित्रण और ग्राफिक डिजाइन अलग–अलग शैलियों के रूप में उभरे हैं, जिससे कलाकारों को अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाने और नई रचनात्मक संभावनाओं का पता लगाने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस प्रकार यदि समग्र रूप से देखें तो ग्राफिक कलाओं ने निम्नलिखित नवीन क्षेत्रों में कलाकारों को अपनी कलात्मक एवं रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का मौका प्रदान किया है–

1. मुद्रण
2. ग्राफिक डिजाइन
3. टाइपोग्राफी
4. ब्रांडिंग एवं विज्ञापन
5. कम्प्यूटर डिजाइनिंग (ग्राफिक्स)

छापे में फोटोग्राफी के शामिल होने से जो जबर्दस्त प्रतिक्रिया हुई है और उसने छापा की दुनिया में बड़ा व्यापक प्रभाव डाला है। सिल्क स्क्रिन के साथ इसका प्रयोग करने से छापे की दुनिया को अनेक नई अभिव्यक्तियाँ मिलीं, जो चीज़ें पारम्परिक रूप से की जाती थी वह अब इस विलय से खुद विघटित होकर कला के साथ जुड़कर एक रूप हो गयीं। इसके साथ ही कई विभिन्न प्रकार की तकनीकों को प्रयोग में लाया जाने लगा; जैसे फोर्टटेज, मोनो टाइप, जेरॉक्स कॉपी, मूविंग प्रिण्ट्स, वीडियो टेप, एनग्रेविंग, फोटोग्राफ्स निगेटिव, एनग्रेविंग और सीधे ही स्थानान्तरित हो जाने वाली वस्तुओं पर इसका प्रयोग नई तरीकों से किया जाने लगा और विभिन्न अंशों में इस तकनीक को इन्स्टॉलेशन के साथ ही समाहित किया गया। इस प्रकार इसमें कई तकनीकें जुड़ती जा रही हैं और अब कम्प्यूटर तकनीक छापाकला में सम्मिलित हुई तो छापाकला की सीमाओं को और छापा शब्द की क्षमताओं को अत्यधिक विस्तार मिला। कम्प्यूटर ने छापे के ऊपर छाये हुए वुड ब्लॉक और इचिंग के प्रभाव को अपने में बुनी हुई इमेजेस से हटा दिया और अब हम 'प्रिण्ट' शब्द को उन पारम्परिक चीजों से ज्यादा सम्पन्न और बढ़ा हुआ पाते हैं छापा में स्टाइल और तकनीक ने माध्यम को भी अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रकट करने का अवसर प्रदान किया है।

dE;Wj ustksvR;f/kd lEHkkoukvksads}kj Nkikdyk dsfy, [kksys gSaog dbZ dykdkjksads LoHkko dsHkhvuqi g]Sft lesaog mudkscgq rsthlsdk;Z djusvkSj t Yn&l&t Yn ml dsifj.kke rd

पहुँचने में मदद करता है। कम्प्यूटर अपनी अनन्त सम्भावनाओं को लेकर उनके सामने है, जिससे कलाकार अपनी कल्पना के ओर भी करीब पहुँचकर इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकता है जो इससे पहले सम्भव नहीं था। फोटोग्राफी, कम्प्यूटर और उसके बाद डिजिटल टैक्नोलॉजी के छापाकला में सम्मिलित होने पर एक और नई तकनीक का विकास हुआ है जिसमें थ्री डायमेन्शनल चीजों की प्रतियाँ डिजिटल पद्धति से निकाली जाती हैं ओर इन थ्री डायमेंशनल प्रतिकृतियों को आप घर बैठे दूर स्थानों पर विशेष मशीनों से फैक्स भी कर सकते हैं।[1]

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही भारत में छापाकला का मुख्य केन्द्र कलकत्ता, हुगली और श्रीरामपुर थे ताकि कलकत्ता के गगेन्द्र नाथ टैगोर पहले भारतीय चित्रकार थे जिन्होंने लिथो माध्यम में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान कीं उनहोंने तत्कालीन समाज के रीति–रिवाजों का व्यंग्यात्मक चित्रण अपने छापों में किया। सन् 1917–18 में वहाँ छापाकारों के साथ मिलकर उन्होंने 'विचित्रा क्लब' की स्थापना भी की थी। इस क्लब मे नन्दलाल बोस, समरेन्द्र और मुकुल डे सरीखे छापाकार थे इस प्रकार बंगाल में छापाकला की महत्ता बढ़ने के साथ ही इसकी विधाओं का विकास हुआं शान्ति निकेतन में नन्दलाल लीनो, काष्ठ, ड्राइ प्वाइंट छापे बनाते थें इनके छापे विवरणात्मक और शिल्प प्रधान है।सन् 1929 में इन्होंने रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा लिखित बच्चों की पुस्तक 'सहज पथ' के लिए अनेक छापाचित्रों की रचना की। सन् 1930 में नन्द लाल बोस ने अब्दुल गफ्फार खाँ का व्यक्ति चित्र तथा महात्मा गाँधी की डांडी यात्रा को सुन्दर सशक्त रेखाओं द्वारा लीनो माध्यम में चित्रित की, जो कि कलात्मक दृष्टि से भी उत्तम है। जिससे छापाकला की उपयोगिता का विस्तार हुआ इसी समय एण्ड्रेकार्पल्स (छापाकार) शान्ति निकेतन आए और इनके छापों को देखकर यहाँ के न केवल छात्र वरन् शिक्षकों ने भी छापाचित्रण की प्रेरणा ग्रहण की। रमेन्द्र नाथ चक्रवर्ती, मनीन्दु भूषण गुप्त, मुरलीधर ताली आदि कलाकार लीनो, काष्ठ, लिथो व इन्टाग्लियों माध्यमों में छापे बनाने लगे।[2] छापाकला की महत्ता इतनी बढ़ने लगी कि नंदलाल बोस के शिष्यों–विनोद, बिहारी मुखर्जी, राम किंकर बैज आदि ने भी छापाकला द्वारा अनेक चित्रों की रचना की इससे भी अधिक नन्दलाल बोस ने अपने पुत्र विश्वरूप बोस को छापाकला की शिक्षा के लिए जापान भेजा जहाँ उन्होंने जापानी परम्परागत काष्ठ छापा तकनीक का अध्ययन किया। जापान से जल रंगों द्वारा मुद्रण की प्रणाली सीखने के बाद इनकी नियुक्ति कला–भवन में छापाकला शिक्षक के पद पर हुई जहाँ इन्होंने शिल्प की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट प्रकृति और मानव कृतियों पर आधारित काष्ठ छापों की रचना की। 1940 के दशक में सफरूद्दीन अहमद, हरिन दास और चित्तें प्रसाद भट्टाचार्य कलकत्ता के प्रसिद्ध छापाकार हुए सोमनाथ होर ने भी यहाँ काष्ठ उत्कीर्णन, लिथो, इन्टागलियों, रंगचित्र, एक्वाटिन्ट आदि माध्यमों में छापाचित्र सृजित किए।

1960 में कलकत्ता के कुछ जागरुक छापाकारों और मूर्तिकारों ने एक संयुक्त संस्था 'सोसाइटी ऑफ कंटम्प्रेरी आर्ट' की स्थापना की। छापाकला के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में इस संस्था ने उल्लेखनीय योगदान दिया।[3] सन् 1963 में केन्द्रिय ललित कला अकादमी, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से एक एंचिग प्रेस की स्थापना सोसाइटी में की गयी। जिसमें अनेक कलाकार आकर कार्य करने लगे जैसे कि संत कर श्यामल दत्त रे, सुहास राय, और अनिल वरन शाह। ये सभी कलाकार एंचिग माध्यम से छापा चित्रण करते थे। इनके अतिरिक्त एक अन्य कलाकार अमिताभ बैनर्जी ने एंचिग के अतिरिक्त इन्टैग्लियों, विस्कोसिटी, एक्वाटिन्ट माध्यमों द्वारा मौलिक अभिव्यक्ति की। शान्ति निकेतन के कला भवन में समय–समय पर संत कर, शान्तनु भट्टाचार्य, सुहास राय, लालू प्रसाद शाह ने छापाकला विभाग में शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा इन शिक्षकों के कुशल निर्देशन में यहाँ

के अनेक प्रतिभाशाली छापाकार सामने आये जो बंगाल के साथ–साथ भारत के अनेक राज्यों में रहकर छापाकला के क्षेत्र में सृजनशील रहे। कलकत्ता के तपन घोष, सुरंजन बसु, पिनाकी बरुआ, हरे कृष्ण बाघ, निर्मलेन्दु दास, सिद्धार्थ घोष, सपन घोष, जय श्री बैनर्जी, तपन भौमिक, अमिताभ भट्टाचार्य, आनन्दामय बैनर्जी, सुब्रत मण्डल, सुदेश सेन गुप्त आदि प्रमुख छापाकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त कीं क्योंकि बंगाल के राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र कलकत्ता की स्थापना के बाद अनेक छापाकारें को कार्यशाला की सुविधा प्राप्त होने लगी थी।

स्वतंत्रता के बाद कला गतिविधियों के आरम्भिक वर्षों में छापाकला के धीमे प्रचार एव प्रसार का कारण छापा कार्यशालाओं और छापा मशीनों का अभाव था। कंवल कृष्ण के पास स्वयं की छोटी छापा प्रेस थी। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट में सोमनाथ के समय ग्राफिक विभाग सक्रिय हुआ। ग्रुप–8 के प्रयास से शिल्पी चक्र में तथा बाद में आइफैक्स ने भी छापा प्रेस का प्रबंध किया गया। आईफैक्स की छापा प्रेस में कलाकार महेन्द्र पुरी के अतिरिक्त, के.के. मल्होत्रा (जिन्होंने हॉलैण्ड में छापाकला का अध्ययन किया) जय झरोटिया, शीला हीरानन्दानी इत्यादि सक्रिय थे।[4] सतीश गुप्ता ने अपनी निजी छापा प्रेस के द्वारा बड़े छापा चित्र जिसे वह जैन विचारों से प्रभावित मानते थे जिन्हें बहुत पसंद किया गया। कविता नैय्यर के प्रयोगात्मक एवं विविध ाता लिए छापाचित्र उनकी स्वयं की छपाकार्यशाला के हैं। कोलकत्ता में अरूण बोस ने धर्मतल्ला के छोटे से कमरे में सोसाइटी ऑफ इण्डियन कन्टैम्पोरेरी आर्टिस्ट की स्थापना की और छापा प्रेस कोलकत्ता में स्थापित किया। भारत के लगभग सभी कला विद्यालयों में छापा कला की शिक्षा के प्रति एक नयी स्फूर्ति 19वीं शताब्दी में आयी परन्तु छापाकारों को पर्याप्त सुविधा देने का श्रेय राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली को जाता है। दिल्ली के अतिरिक्त चेन्नई, भुवनेश्वर, कोलकत्ता, लखनऊ में छापाकार्यशालाओं की स्थापना के साथ–साथ छापाकला का चहुंमुखी विकास अस्सी के दशक में होने लगा।

दिल्ली छापाकला का सर्वाधिक सक्रिय केन्द्र रहा है। छापाकला के प्रचार तथा विस्तार में दिल्ली का महत्वपूर्ण योगदान 1968 में ग्रुप–8 की स्थापना के साथ हुआ। राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर छापाकला की प्रदर्शनियों के आयोजन द्वारा छापाकला के प्रति कलाकारों में एक नयी चेतना पैदा हुई और समकालीन कला में छापाकला की महत्ता एवं उपयोगिता इसी से बढ़ती चली गयी। छापाकला की इस बढ़ती महत्ता एवं आवश्यकता गढ़ी में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा स्थापित छापाकार्यशाला का महत्वपूर्ण स्थान है। देवराज, सुरिन्दर चड्ढा, मंजीत बाबा, सरोजपाल गोगी, जी.आर. संतोष, अम्बा दास, पलानियप्पन, रामचन्द्रन, विक्की पटेल, के.के. हैब्बर, जतिन दास, नरीन नाथ, भूषण एस.आर., लक्ष्मी गोड़, रीनी धूमाल इत्यादि अनेक कलाकारों ने गढ़ी कार्यशाला में छापाचित्रों की रचना की। आज भी गढ़ी में एक सक्रिय छापाकार्यशाला है, जहाँ अनेक युवा कलाकार कार्यरत हैं।

वर्ष 1970 में पाल लिंगरन द्वारा निर्देशित कार्यशाला में सौ से अधिक कलाकारों को देश के हर भाग से आमंत्रित किया गया था। छापाकला के इतिहास में यह एक अहम् घटना है। इसी श्रृंखला में अगस्त 1990 में संगठित 'द इण्डियन प्रिंटमेकर्ज गिल्ड' है। आनंदमय बैनर्जी, बूला भट्टाचार्य, दत्तात्रेय आप्टे, जयंत गजेरा, कविता नैय्यर, के आर, सुब्बन्ना, कंचन चन्दर, मोती झरोटिया, शुक्ला सावंत, सुशांत गुहा, सुखविन्दर सिंह तथा सुब्बा घोष गिल्ड के बारह युवा सदस्यों ने छापाकला के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर एक नया विश्वास पैदा किया। इस गिल्ड का उद्देश्य कलाकारों के साथ–साथ दर्शकों के बीच प्रिंट में किया अर्थात् छापाकला में रुचि पैदा करना था।[14]

वर्ष 2002 में न्यूयार्क के मैनहट्टन ग्राफिक सेन्टर के प्रसिद्ध भारतीय छापाकार विजय कुमार के सहयोग से एक बड़ी अंर्तराष्ट्रकीय छापा चित्र प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया। गिल्ड के अधिकतर सदस्य 'चार्ल्स वालास', इंग्लैण्ड में छात्रवृत्ति के तहत भी शिक्षित थे। अतः अंर्तराष्ट्रीय प्रयोगों तथा छापा के नये आयामों से परिचित होकर सभी छापाकला की महत्ता को जान चुके थे और इसीलिए छापाकला के क्षेत्र में बड़ी मेहनत से प्रभावशाली कलाकृतियों का सृजन करने लगे, परिणाम स्वरूप इनमें से अधिकतर सदस्य राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं। देखते ही देखते छापा उत्पाद तकनीक एवं सूचना तक ही सीमित न रहकर कला रूप हो गया। अब वह हमारा इतिहास ही नहीं बल्कि एक साथ भूत, भविष्य और वर्तमान का बोध कराता है। सूचना और अलंकरण जैसे शुरुआती मकसद की सीमाओं को तोड़कर छापा बनाने के माध्यम में जहाँ कला की दुनिया में प्रवेश किया व अपनी एक कलात्मक पहचान भी बनायी। वह सूचना से परे एक कला भी है। इस विचार ने कलाकारों को एक नया माध्यम सुलभ कराया। इसके द्वारा वे कला को लोगों की ओर ले जा सकते थे। इसीलिए कलाकारों को यह माध्यम उनकी संवेदनाओं के अनुरूप और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की अपार संभावनाओं से परिपूर्ण लगने लगा जिसके कारण कलाकारों ने इस माध्यम को अपनाकर कला रूप प्रदान किया व उस माध्यम को उसके प्रारम्भिक उद्देश्य से अलग कर दिया। छाया तकनीक की अपार संभावनाएँ व अपने साथ कई चीजों का समावेश कर सकने की क्षमता के इस विशिष्ट गुण के कारण छपाकला ने कलाकारों की कलात्मक गुणवत्ता को बढ़ावा देने का कार्य किया इसी से छापे को कला की दुनिया में छापाकला के रूप में स्थापित होने में सफलता मिली। इसी से छापाकला की उपयोगिता कला के क्षेत्र में बढ़ती चली गयी।

जिस कारण छापाकला भारतीय कला तथा संस्कृति का अब एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके योगदान से आधुनिक भारतीय कला को विश्व में अत्यधिक सम्मान प्राप्त हुआ है। भारत की छापाकला आज अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो चुकी है।[5] भारत में छापाकारो की एक लम्बी सूची है जैसे कि–सोमनाथ होर, कृष्णा एन. रेडडी, ज्योतिभट्ट, पी.टी. रेड्डी देवराज, लक्ष्मी गौड़, भवानी शंकर इत्यादि आज छापा जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके है।

संदर्भ

1. समकालीन कला संख्या– 22 जून से सितम्बर 2002 लेख– छापाकलाः चुनौतियाँ और संभावनाएँ (पृ. सं. 42)
2. समकालीन कला संख्या– 14 मई 1990– जुलाई 1993 में प्रकाशित लेख पूर्वाचंल क्षेत्र की छपाकला एक सिंह अवलोकन (पृ. सं. 38)
3. कला त्रैमासिक संख्या– 29 छापाकला विशेष अंक, अप्रैल से जून 2002 राज्य ललित कला अकादमी उ.प्र. (पृ. सं. 10)
4. समकालीन कला संख्या– 14 मई 1990– जुलाई 1993, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका (पृ. सं. 40)